अनामिका कुमारी

29/6/21
B.A. I Part Hindi (2)

Hindi — रसखान का प्रदेश आराध्य ...
रसखान ... की ही तल्लीनता रही है
के मंदिर की बाँकी झाँकी तक ही ... तक
है प्राकृतिक रस का प्रवेश आराध्य के अन्तःपुर तक
को है। जितना ब्रजभूमि का प्यार लेकर और पुकारा
रही है उनके इष्ट ब्रजभूमि की रसखान ने रचना
के रूप में पाया है —

ब्रह्म मैं ढूँढ्यौ पुरानन-गानन
बेद रिचा सुनी चौगुने चायन।
देख्यौ सुन्यौ कबहूँ न कितूँ
वह कैसे सरूप औ कैसे सुभायन।
टेरत-हेरत हारि परयौ, रसखानि बतायो न
लोग लुगायन।
देख्यौ, दुरौ वह कुंज कुटीर में बैठो पलोटत
राधिका पायन।

... यह कि रसखान ब्रजभूमि का ... है और उनको ... आकर्षण भी रहा है। रसखान की भक्ति तन्मयता से परिपूर्ण है जिसमें ... [illegible] ...
को प्राप्ति हो रसखान ... के प्रति रसखान का प्रेम इतना गहरा है कि वे जन्म-जन्मान्तर तक कृष्ण का साहचर्य प्राप्त करना चाहते हैं। अपने आराध्य देव की भूमि में रहना चाहते हैं। पशु, पक्षी, या के रूप में यदि अगले जन्म में जड़ पत्थर भी होना पड़े तो रसखान की कामना है ... होंगे। वे पल भर के लिए भी अपने आराध्य से अलग नहीं होना चाहते —

मानुष हौं तो वही रसखानि
बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन
जो पसु हौं तो कहा बसु मेरो
चरौं नित नंद की धेनु मँझारन
पाहन हौं तो वही गिरि को
जो धर्यो कर छत्र पुरंदर धारन
जो खग हौं तो बसेरो करौं
मिलि कालिंदी कूल कदम्ब की डारन।

रसखान की भक्ति अनन्य भक्ति है। उनका राग कृष्ण में स्थिर हो गया है। रसखान ने आत्मसमर्पण किया है। कृष्ण के लिए ही दिल्ली की ~~...~~ साहबी छोड़कर फकीर हुए हैं।

———

शाबाश!